Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्रैक्टिस पेपर्स (मॉडल उत्तर सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS12

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्रैक्टिस पेपर्स (मॉडल उत्तर सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

खंड-1	प्राचीन भारत	5-24
खंड-2	मध्यकालीन भारत	25-39
खंड-3	आधुनिक भारत	40-60
खंड-4	विश्व इतिहास	61-107
खंड-5	मानचित्र	108-123

खंड
1

प्राचीन भारत
(Ancient India)

1. प्राचीन भारतीय श्रुति साहित्य का ऐतिहासिक साक्ष्यों के रूप में किस सीमा तक उपयोग किया जा सकता है?

उत्तर: श्रुति का शाब्दिक अर्थ होता है- जो सुना गया हो। श्रुति साहित्य के अंतर्गत चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक व उपनिषद आदि ग्रंथ आते हैं। जैसा कि विदित है कि वेद, ब्राह्मण, आरण्यक व उपनिषद आदि ग्रंथ विशेषकर वैदिक काल के आरंभ से लेकर छठी शताब्दी ई.पू. तक के इतिहास के अध्ययन के लिये महत्त्वपूर्ण हैं तथा इस कारण से श्रुति साहित्य का ऐतिहासिक महत्त्व है। फिर वैदिक काल के इतिहास अध्ययन के लिये पुरातात्त्विक स्रोत अत्यंत सीमित हैं, जिस कारण से श्रुति साहित्य का ऐतिहासिक महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

वेदों से आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन के संबंध में जानकारी मिलती है। इनमें ऋग्वेद से ऋग्वैदिक आर्यों के (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.) संबंध में ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। सामवेद में ऋग्वेदकालीन मंत्रों के संगीतमय उच्चारण करने की विधि का वर्णन है। यजुर्वेद में कर्मकांड से संबंधित जानकारी मिलती है लेकिन इसमें तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का वर्णन मिलता है। वहीं अथर्ववेद तत्कालीन लोक वृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। प्राचीन इतिहास के अध्ययन के साधन के तौर पर ऋग्वेद के पश्चात् ब्राह्मण ग्रंथों का स्थान आता है। वहीं आरण्यक व उपनिषद ग्रंथ भारतीय दर्शन के प्रमुख स्रोत के रूप में प्रसिद्ध हैं।

परंतु श्रुति साहित्य की अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। दरअसल श्रुति साहित्य का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण मौखिक परंपरा से होता रहा तथा इसे लिपिबद्ध बाद के कालों में किया गया। बाद के काल में लिखे जाने के कारण इसमें क्षेपक के रूप में अंश जुड़ जाते हैं। उदाहरण के लिये ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं जिनमें 2 से 7 मंडल तक को प्राचीन तथा 1, 8, 9, 10 मंडल को अपेक्षाकृत बाद में लिखा गया हिस्सा माना जाता है। फिर हमें यह भी ध्यान रखना चाहिये कि वैदिक ग्रंथ कोई लोक ग्रंथ नहीं हैं। इनकी रचना, संरक्षण और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरण ब्राह्मणों के एक विशिष्ट वर्ग के द्वारा किया गया। इस कारण से ये ग्रंथ लोक मत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

समग्रत: ऐसा कहा जा सकता है कि श्रुति साहित्य का ऐतिहासिक महत्त्व है। किंतु इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं जिसे इतिहास अध्ययन के लिये उपयोग करते समय ध्यान रखना चाहिये।

2. प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सिक्कों की भूमिका निरूपित कीजिये।

उत्तर: पुरातात्त्विक सामग्री में मुद्राओं का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये मुद्राएँ प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

भारत में सबसे प्राचीन सिक्के आहत या पंचमार्क हैं जो सामान्यत: चाँदी और तांबे के बने थे। ये सिक्के समूचे देश से मिले हैं। इन सिक्कों पर कोई शब्द या लेख नहीं है, लेकिन इन सिक्कों के विश्लेषण से प्राचीन भारत के आर्थिक-सामाजिक पहलू के संदर्भ में आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है। छठी शताब्दी ईसा. पूर्व से मौर्यकाल तक ये सिक्के संभवत: शासकों द्वारा निर्गत किये गए थे। कालांतर में विभिन्न नगरों व श्रेणियों द्वारा भी आहत सिक्के निर्गत किये गए। इनके द्वारा उस समय की अर्थव्यवस्था में मौद्रीकरण और व्यापार-वाणिज्य में श्रेणियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका का पता चलता है।

भारत में सर्वप्रथम लेखयुक्त सिक्के हिन्द-यूनानी शासकों द्वारा निर्गत किये गए। चांदी एवं तांबे के ये सिक्के सुंदर व कलात्मक आकृतियों से सजे हुए हैं। इन सिक्कों के माध्यम से ही हमें उन चालीस से अधिक भारतीय-यूनानी शासकों का पता चलता है जिन्होंने भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में शासन किया। इन सिक्कों के द्वारा ही हमें उन शक-पार्थियन राजाओं का पता चलता है, जिनके बारे में किसी अन्य स्रोत से जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

खंड
2

मध्यकालीन भारत (Medieval India)

1. अलबरूनी द्वारा किये गए भारतीय समाज के वृत्तांत की सत्यवादिता (veracity) पर टिप्पणी कीजिये।

उत्तर: अलबरूनी की कृति 'किताब-उल-हिन्द' 11वी सदी के भारतीय धर्म और दर्शन, सामाजिक जीवन आदि विषयों के अध्ययन का प्रमुख स्रोत है।

अलबरूनी भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उल्लेख करता है कि भारतीय समाज 4 वर्णों में विभाजित था। इसके अलावा वह अंत्यजों की 8 श्रेणियों का भी उल्लेख करता है। अत्यंज पदानुक्रम में शूद्रों से नीचे आते थे तथा ये वर्ण व्यवस्था में समाहित नहीं थे। वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान सबसे ऊपर था जो बह्म के सिर से उत्पन्न होने का दावा करते थे। इसके पश्चात् क्षत्रियों का स्थान आता है जो शासक वर्ग से संबद्ध रखते थे। अलबरूनी उल्लेख करता है कि मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी भी इन्हीं दो वर्णों को माना जाता था। उसके अनुसार वैश्यों व शूद्रों को वेद पाठ करने की अनुमति नहीं थी तथा इन दो वर्णों में कोई खास सामाजिक विभेद नहीं था तथा ये एक ही साथ रहते थे। अलबरूनी अपनी कृति में यह दर्ज करता है कि विवाह, खान-पान व रहन-सहन के नियम भी वर्ण व्यवस्था के अनुरूप निर्धारित किये गए थे।

वह अछूतों के बारे में उल्लेख करते हुए यह विवरण देता है कि इन्हें नगर के बाहर रहना पड़ता था तथा इन्हें प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न संतान माना जाता था।

अलबरूनी ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विवाह के प्रकार, संपत्ति व उत्तराधिकार के नियम का भी वर्णन किया है। उसके अनुसार हिन्दुओं में तलाक का प्रचलन नहीं था। सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, बाल विवाह आदि प्रचलित थीं। इस प्रकार अलबरूनी ने अपनी कृति में भारतीय समाज के बारे में बहुत ही सजीव वर्णन दिया है।

हालाँकि इसके विवरण की कुछ सीमाएँ भी हैं। भारतीय समाज के बारे में अलबरूनी का अवलोकन संस्कृत ग्रंथ पर आधारित है। वह ऋग्वेद के पुरुषसूक्त का हवाला देकर वर्ण व्यवस्था की व्याख्या करता है। इस कारण से इसके विवरण में समाज की वास्तविक तस्वीर की बजाय युगीन आदर्श अधिक प्रतिबिंबित होता है।

2. बरनी के विवरण का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

उत्तर: दिल्ली सल्तनत के अध्ययन के साहित्यिक स्रोत के रूप में बरनी के दो ग्रंथ 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' एवं 'फतवा-ए-जहाँदारी' का विशेष महत्त्व है। माना जाता है कि जहाँ मिन्हाज-ए-सिराज ने अपना लेखन समाप्त किया है, बरनी ने अपनी 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' का लेखन वहीं से प्रारंभ किया। बरनी का यह ग्रंथ बलबन के काल से लेकर मुहम्मद-बिन-तुगलक के काल तक के इतिहास पर प्रकाश डालता है।

भारत में बरनी के लेखन से ही इतिहास लेखन की पर्शियन विधा वास्तविक रूप में प्रारंभ हुई। बरनी की 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें सुल्तान के दरबार के इर्द-गिर्द घटनाओं की जानकारी विशेष रूप से प्राप्त होती है। 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' से हमें स्पष्ट रूप से जानकारी प्राप्त होती है कि बलबन ने सत्ता का एकीकरण किस प्रकार किया, खिलजियों के शासनकाल में सल्तनत का स्वरूप किस प्रकार बदलता गया तथा अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद बिन तुगलक जैसे प्रसिद्ध सुल्तानों के समय प्रशासन का स्वरूप कैसा था। मिन्हाज-ए-सिराज के विपरीत बरनी ने समकालीन समय की महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं के अतिरिक्त आर्थिक व प्रशासनिक ढाँचे पर भी महत्त्वपूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। बरनी की एक अन्य कृति फतवा-ए-जहाँदारी को एक ऐतिहासिक कृति तो नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह विविध विषयों पर स्वयं बरनी के विचारों की अभिव्यक्ति है, किंतु समकालीन कई महत्त्वपूर्ण नीतियों यथा अलाउद्दीन की बाज़ार सुधार की नीति तथा विभिन्न सुल्तानों की राजत्व की अवधारणा की जानकारी इससे प्राप्त होती है।

खंड
3

आधुनिक भारत
(Modern India)

1. "क्लाइव ने अपने कार्यों से अपनी कीर्ति को धो दिया।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

उत्तर: रॉबर्ट क्लाइव ब्रिटिश-भारतीय इतिहास के सर्वाधिक विवादास्पद व्यक्तित्वों में से एक है। एक साधारण क्लर्क के स्तर से उठकर वह बंगाल का गवर्नर और इंग्लैंड के लॉर्ड समाज का सदस्य बना।

क्लाइव ने पहले-पहल दक्षिण भारत में कर्नाटक युद्ध में अर्काट के घेरे के समय अपनी सैनिक और कूटनीतिक क्षमता का प्रदर्शन किया। इससे दक्षिण भारत में फ्राँसीसियों की तुलना में अंग्रेज़ों की स्थिति मजबूत हुई। इसके बाद उसने बंगाल के नवाब सिराज-उद्-दौला से फोर्ट विलियम पुन: जीतकर अपनी सैन्य प्रतिभा साबित की। इसी दौरान क्लाइव ने बंगाल के सामरिक-आर्थिक महत्त्व को समझ लिया था। प्लासी के युद्ध में उसने षड्यंत्र द्वारा नवाब को हराकर बंगाल में कठपुतली नवाब मीर जाफर को गद्दी पर बैठाया। और उससे ईस्ट इंडिया कंपनी के लिये विभिन्न व्यापारिक रियायतें, व्यक्तिगत नजराने प्राप्त किये। यहाँ तक कि बंगाल से ब्रिटिश निर्यात के लिये वस्तुओं को भी बंगाल के ही राजस्व से खरीदा जाने लगा। उसकी इसी कूटनीतिक कुशलता के लिये उसे इलाहाबाद की संधि (बक्सर युद्ध के पश्चात्) के लिये लंदन से विशेष तौर पर बुलाया गया। इलाहाबाद की संधि में उसने कंपनी के लिये बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी का अधिकार प्राप्त कर कंपनी को भारत में वैधानिक स्वरूप प्रदान किया।

दीवानी के रूप में कंपनी को सीधे राजस्व वसूल करने का अधिकार मिल गया। कंपनी को अपना उप-सूबेदार नामांकित करने का भी अधिकार मिल गया। इस तरह कंपनी की बंगाल पर पकड़ मजबूत हो गई। निजामत का अधिकार बंगाल के नवाब के पास ही रहने दिया गया और कंपनी अपने कर्मचारियों और उप-दीवानों की सहायता से बंगाल का राजस्व वसूल करने लगी। यह द्वैध शासन व्यवस्था अंग्रेज़ों के लिये अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई। कंपनी के पदाधिकारी दोनों हाथों से बंगाल की संपदा बटोर रहे थे जिसके परिणामस्वरूप बंगाल कंगाली की कगार पर आ पहुँचा। कंपनी ने भारतीय माल खरीदने के लिये इंग्लैंड से धन भेजना बंद कर दिया। इसके स्थान पर वे बंगाल से प्राप्त राजस्व से भारतीय माल खरीदते रहे और इसे विदेशों में बेचते रहे। इस धन को कंपनी की लागत-पूंजी समझी जाती थी और इसे कंपनी के 'लाभ' के रूप में स्वीकार किया जाता था। 1767 से ब्रिटिश सरकार को कंपनी को चार लाख पौंड का भुगतान प्रतिवर्ष किया जाता था।

1766-1767 और 1768 में बंगाल से लगभग 57 लाख पौंड की धन निकासी हुई। इसी दोहरे शासन के कारण बंगाल तेजी से दरिद्र हो गया और 1770 में बंगाल में पड़े भीषण अकाल में बंगाल की एक-तिहाई जनसंख्या काल के गाल में समा गई।

इसी संदर्भ में तत्कालीन ब्रिटिश इतिहासकारों और नेताओं ने क्लाइव की यह कहकर आलोचना की है कि उसकी नीतियों के कारण ही बंगाल दुर्दशा का शिकार हुआ जिसके चलते लाखों लोग मारे गए। इसके अतिरिक्त उसने स्वयं भी इस लूट से लाभ कमाया था। अत: ब्रिटिश संसद में इन आरोपों की जाँच की गई।

वस्तुत: यह क्लाइव के कार्यों को देखने का एक दृष्टिकोण है। दरअसल क्लाइव ने बंगाल में उस आधार को तैयार किया जिस पर अंग्रेज़ों ने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया। भारतीय साम्राज्य से मिले धन से ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति का आधार तैयार हुआ। इस तरह क्लाइव को भारत में अंग्रेज़ी राज्य के संस्थापक के रूप में जाना जाता है।

2. "हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाए बगैर शत्रुओं को पूर्णत: पंगु बना दिया।" इस कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर: यह कथन तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध की समाप्ति के पश्चात् अंग्रेज़ों एवं मैसूर राज्य के बीच 1792 ई. में संपन्न श्रीरंगपट्टनम की संधि के संबंध में लॉर्ड कार्नवालिस के द्वारा उद्धृत किया गया था।

इस संधि के तहत अंग्रेज़ों को मैसूर शासक टीपू का आधा राज्य प्राप्त हुआ जिसे अंग्रेज़ों द्वारा युद्ध पूर्व अपने सहयोगियों के साथ किये गए समझौते के अनुरूप आपस में बाँटना था। अत: इस क्षेत्र से एक बड़ा भाग निजाम को प्राप्त हुआ

खंड
4

विश्व इतिहास
(World History)

1. "मानवतावाद पुनर्जागरण का स्रोत एवं परिणाम दोनों है।" विवेचना कीजिये।

उत्तर: पुनर्जागरण से पूर्व मध्यकाल में यूरोप का समाज जड़ हो चुका था। लौकिक जीवन के स्थान पर पारलौकिक जीवन पर बल दिया जाता था जहाँ ईश्वर केंद्र में था तथा धार्मिक संरचना ने मानवीय स्वतंत्रता को बंधक बना रखा था। जिससे वह जन्म से मृत्यु तक धर्म के गतिहीन चक्र में फँसा हुआ था। उसकी बौद्धिक प्रगति एवं वैचारिक स्वतंत्रता का मार्ग अवरुद्ध हो गया था।

इन्हीं परिस्थितियों में 14वीं-16वीं सदी के दौरान यूरोप में हुए धर्मयुद्ध, सामंतवाद के पतन, व्यापार-वाणिज्य के विकास, कुस्तुनतुनिया के पतन, भौगोलिक खोजों, शिक्षा एवं साहित्य के विकास आदि ने यूरोप में एक नई चेतना को जन्म दिया जिसने मनुष्य को मध्यकालीन अंधकार से निकलकर प्राचीन गौरव को पुन:स्थापित करने के लिये प्रेरित किया तथा व्यक्ति को उसके महत्त्व से परिचित कराया।

इस चेतना के आने से लौकिक जीवन को महत्ता प्राप्त हुई तथा मानवतावाद एवं व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिला। अत: मानव के अंदर तर्क, विवेक, जिज्ञासा एवं साहसिकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला जिसके कारण मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को जानने, नवीन मार्गों की खोज करने की दिशा में प्रेरित हुआ। इसी क्रम में विभिन्न भौगोलिक एवं वैज्ञानिक खोजें सामने आईं।

इसके साथ ही अब साहित्य के केंद्र में भी मानव का अंकन किया जाने लगा। मानव की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाने लगा फलस्वरूप मानविकी विषयों का विकास हुआ साथ ही कला के विभिन्न क्षेत्रों में भी मानव का अंकन प्रारंभ हुआ तथा इसी क्रम में चित्रकला एवं मूर्तिकला की विभिन्न शैलियाँ सामने आईं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि मानवतावादी मूल्यों की पुनर्स्थापना के प्रयास के रूप में पुनर्जागरण का जन्म हुआ जिसने मानव के अंदर तार्किकता का विकास किया तथा उसे उसके महत्त्व से परिचित करवाया।

2. "रूसो का प्रयास व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सरकार की संस्था के बीच सरकार की संविदा थ्योरी की नई दृष्टि के माध्यम से समन्वय स्थापित करना था।"

उत्तर: रूसो मानव के प्राकृतिक अधिकारों का प्रबल समर्थक था तथा उसने मनुष्य के इन अधिकारों की सुरक्षा के लिये एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का समर्थन किया।

उसने अपनी पुस्तक "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के तहत कहा कि "मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है परंतु सर्वत्र ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है।" कहने का तात्पर्य यह है कि मानव प्राकृतिक रूप से अनेक गुणों से संपन्न था, उसमें स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व की भावना सन्निहित थी, किंतु सभ्यता के विकास के क्रम में एक कृत्रिम समाज का निर्माण हुआ, जिसमें मानव के प्राकृतिक मूल्यों का अवमूल्यन हुआ तथा चारों ओर स्वार्थ, लालच एवं घमंड का बोलबाला हुआ। फलत: मनुष्य भ्रष्ट होता चला गया। इसलिये रूसो ने मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु पुन: प्राकृतिक गुणों के आत्मसातीकरण की बात कही।

ठीक इसी प्रकार राज्य के संबंध में रूसो का मानना था कि सभ्यता के विकास के साथ संपत्ति की अवधारणा का विकास हुआ और इस संपत्ति पर अधिकार को लेकर संघर्ष की शुरुआत हुई। फलत: आपसी संघर्ष को टालने तथा सुरक्षा के दृष्टिकोण से लोगों ने अपने व्यक्तिगत अधिकारों का परित्याग कर एक संविदा के तहत राज्य का निर्माण किया तथा अपने अधिकारों का समर्पण राज्य को किया। यहाँ यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि यह समर्पण स्वयं अपने अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये किया गया था, न कि सत्ताधारी के प्रति।

इस तरह चूँकि राज्य का जन्म सत्ता एवं उन लोगों के बीच इकरारनामा था, जिन्होंने इसका निर्माण किया था इसलिये सत्ता पर आसीन व्यक्ति जनता का प्रतिनिधि था और उसका दायित्व जनता की समानता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व की

खंड
5

मानचित्र
(Map)

प्रश्नः दिये गए मानचित्र पर अंकित स्थानों की पहचान कीजिये।

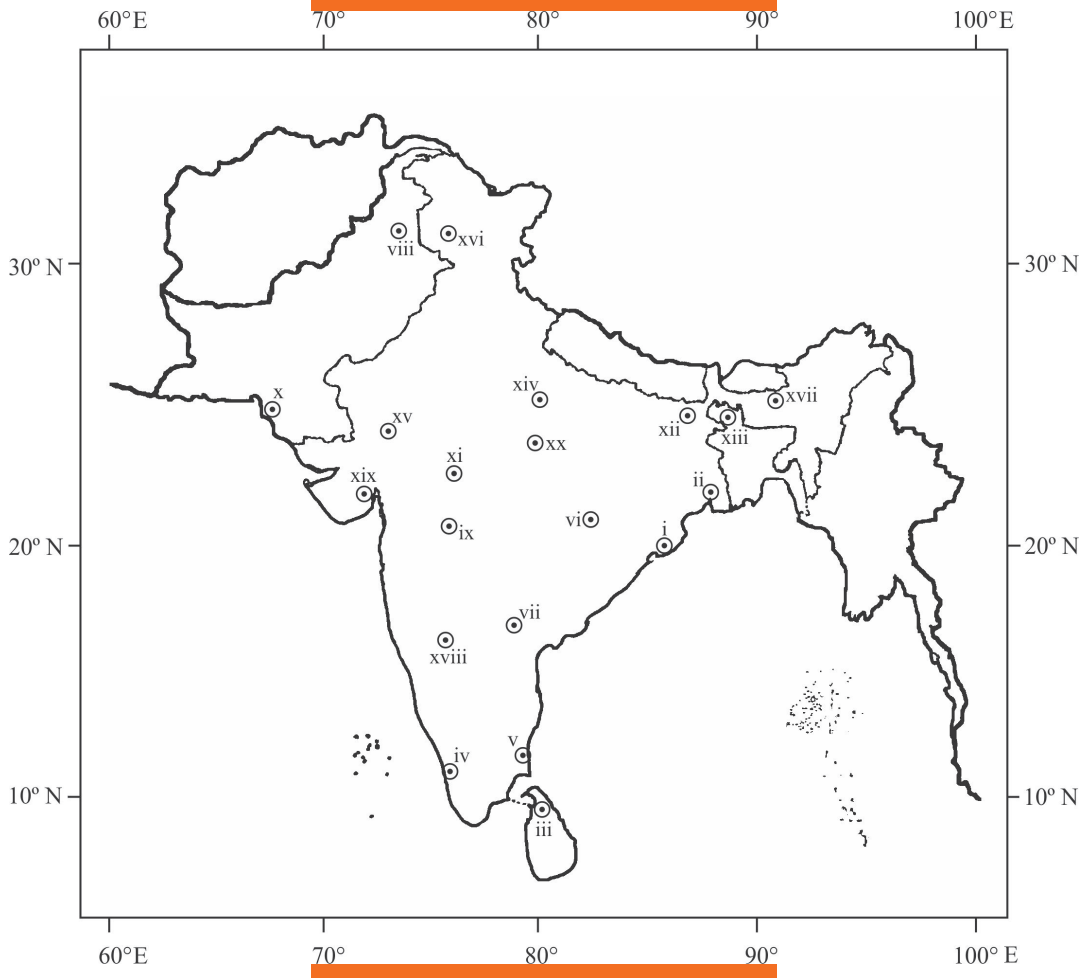

i. प्रसिद्ध जैन गुफा स्थल	vii. प्रमुख बौद्ध स्थल .....
ii. एक प्राचीन बंदरगाह	viii. प्राचीन शैक्षणिक केंद्र .....
iii. बौद्ध स्थल	ix. प्राचीन गुहाचित्रकला स्थल .....
iv. एक प्राचीन बंदरगाह	x. रेशम मार्ग से जुड़ा प्रमुख बंदरगाह .....
v. एक संगमकालीन बंदरगाह	xi. प्राचीन राजनीतिक एवं धार्मिक केंद्र .....
vi. गुप्तकालीन मंदिर स्थल	xii. प्राचीन शैक्षणिक केंद्र .....
xiii. गुप्तकालीन प्रशासनिक अभिलेख स्थल	xvii. प्राचीन राजनीतिक एवं धार्मिक केंद्र .....
xiv. एक गुप्तकालीन मंदिर स्थल	xviii. प्रसिद्ध मंदिर समूह स्थल .....
xv. जैन स्थल	xix. प्राचीन शैक्षणिक केंद्र .....
xvi. सूर्य मंदिर स्थल	xx. एक विश्व विरासत स्थल .....

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456